International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 17
November 2016

# दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत के दृष्टिकोण

कीर्ति
शोधार्थी
राजनीतिक विज्ञान विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

**शोध–सारः** प्रस्तुत शोध में मैने दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत के सामरिक हितों का वर्णन किया है। साथ–साथ चीन–पाकिस्तान धुरी का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव व चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' अथवा मोतियों की माला नीति भारत के लिये किस प्रकार खतरा पैदा कर सकती है तथा भारत ने इस नीति को प्रतिसंतुलित करने के लिये अपनी 'नेकलस ऑफ डायमण्ड' नीति को किस प्रकार प्रयोग में लाया गया है तथा वर्तमान में उत्पन्न रोहिग्या समस्या भारत के लिये किस प्रकार संकट पैदा कर सकती है तथा इसका क्या कारगर समाधान होगा आदि विषयों पर इसमें चर्चा की है।

**मुख्य शब्दः** स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स, नेकलस ऑफ डायमण्ड, रोहिग्या, दक्षिण–पूर्व एशिया

## भूमिकाः

अर्न्राष्ट्रीय विश्लेषकों के अनुसार एक देश की सुरक्षा उस देश के लिये सबसे महत्वपूर्ण विषय होती है। जिसको लेकर प्रत्येक देश बहुत अधिक संवेदनशील होता है। डॉ० रोबिन्सन ने स्पष्ट किया है कि एक देश के कुल मिलाकर छह हित होते है। परन्तु प्रथम स्थान पर राष्ट्रीय सुरक्षा को रखा गया है। सुरक्षा से संबंध केवल आन्तरिक सुरक्षा से ही नहीं इसका मुख्य उद्देश्य बाहरी सुरक्षा को पुख्ता करना है। अन्य देशों की भांति भारत के लिये भी रक्षा उसका प्राथमिक उद्देश्य है। यहा हम भारत की दक्षिण–पूर्व एशिया में सामरिक स्थिति का वर्णन करेंगे। जहां दक्षिण–पूर्व एशिया की बात है यह हमेशा ही भारत की विदेश नीति के लिये महत्व के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक में यह क्षेत्र भारत के लिये अत्यन्त आवश्यक हो गया है। स्वतन्त्रता के समय भारत की विदेशी नीति का आधार पश्चिमी देश थे परन्तु अब 1990 के दशक के बाद भारत ने 'पूर्व की ओर देखो नीति' को आधार बना कर इन देशों की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया तथा वर्तमान सरकार ने 2014 में इन देशों के लिये अपनी नई नीति 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' को अपनाया अथवा 'पूर्व

की ओर देखों' नीति को कार्यरूप दिया गया तथा सरकार इसी नीति को आगे बढाकर अपने सुरक्षात्मक पक्ष को मजबूत कर रही है।

**चीन–पाक धुरी को प्रतिसन्तुलन करने के लिये दक्षिण–पूर्व एशिया का भारत के लिये सामरिक दृष्टि से महत्वः**

यह सर्वविदित है कि चीन दक्षिण–पूर्वी एशियाई क्षेत्र में लगातार अपना प्रभाव बढा रहा है। वह अपनी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स नीति को प्रभावी बनाने के लिये यहां अपने अड्डे स्थापित कर रहा है। इपनी इस नीति के तहत चीन ने दक्षिण–पूर्व देशों से लीज पर द्वीप खरीद कर इन्हे सैनिक अड्डों में बदल दिया है जो भारत के लिये चिन्ता का विषय है। इस नीति के तहत चीन ने म्यांमार के सितवे पोर्ट को अपना सैन्य अड्डा बना लिया है। जो भारत के अण्डमान द्वीप से T मात्र 23 किलोमीटर दूर ही है जो भारत के लिये चिन्ता का विषय है। बर्मा में कोको द्वीप पर भी चीन ने अपना नियत्रंण कर लिया है।

भारत के लिये यह आवश्यक हो गया है कि वह इन दोनों शत्रुओं को प्रतिसन्तुलित करने के लिये दक्षिण–पूर्व देशों की मदद ले तथा इन द्वीपों में सैन्य अड्डे बनने से रोके और इन देशों के साथ सैन्य अभ्यास करे ताकि चीन व पाकिस्तान के प्रभाव को कम किया जा सके। भारत के विदेशा मंत्रालय ने चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' नीति को प्रतिसन्तुलित करने के लिये अपनी नई नीति' नेकलस ऑफ डायमण्ड' नीति की घोषणा की। जिसका उद्देश्य है दक्षिण–पूर्व एशिया व अन्य हिन्दमहासागरीय देशों के साथ सैन्य सम्बन्धों को मजबूत किया जाये इसी नीति को व्यावहारिक रूप देते हुये भारत ने प्रथम केबल एयर स्टेशन कैम्पबैल द्वीप पर स्थापित किया और ईरान कि मदद से चाहबार को विकसित करने कि तैयारी कर दी गई है। भारत ने प्रशान्त महासागर में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिये दक्षिण चीन सागर विवाद में भी भारत ने आसियाना देशों का पूरा साथ दिया है तथा वहां पर अपनी पहुँच बढाने के लिये भारत सांस्कृतिक सामाजिक संबंधों का पूरा प्रयोग कर रहा है। वह इन देशों को अपनी सॉफ्ट पॉवर पॉलिसी के माध्यम से जोड़ना चाहता रहा है। क्योंकि चीन–पाक धुरी को काऊण्टर करना भारत की विदेश नीति का पहला लक्ष्य बन गया है।

**समुन्द्री सुरक्षा व दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र का इसमें महत्व**

प्रत्येक देश के लिये उसकी सुरक्षा अत्यन्त महत्व का मुद्दा होता है। उसकी सुरक्षा के लिये वह देश आन्तरिक व बाह्य स्तर पर अपनी सुरक्षा को मजबूत करने के प्रयास करता है। भारत तीन

ओर से समुद्रों से घिरा हुआ है। सागर हमारी समृद्धि में महत्वपूर्ण कारक के रूप में रहे है। वर्तमान समय में विज्ञान प्रौद्योगिकी की उन्नति ने प्रत्येक देश के लिये महासागरों का आर्थिक महत्व बढा दिया है। समुन्द्र के माध्यम से आतंकवाद का एक घिनौना रूप भारत मुम्बई हमले में देख चुका है। भारत के लिये यह आवश्यक हो गया है कि वह दक्षिण–पूर्व एशिया देशों से अपने सामरिक हितों को ध्यान में रखकर समझौते करे फरवरी 2016 को भारतीय नौसेना एवं म्यांमार के मध्य भारत–म्यांमार समन्वित मॉडल मानक प्रचालन प्रक्रिया व अण्डमान द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में हस्ताक्षर किये। समुद्री गश्त पर समझौता करने वाला भारत विश्व का तीसरा देश बन गया है। इससे लंबी समुद्रिक सीमा को साझा करने वाले दोनों देशों के मध्य सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अण्डमान निकोबार सागर क्षेत्र और बंगाल की खाडी में समन्वित गश्त को सुचारू ढंग से करने में सहायता मिलेगी।

इस प्रकार आसियान के साथ भारत के सहयोग का एक उभरा हुआ पहलू सुरक्षा संबंधी मामलों में सहयोग है। दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों से सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर विचार–विमर्श करने के लिये –1994 में आसियान मंच की स्थापना की गई। वर्तमान में दक्षिण–पूर्व एशिया क्षेत्र में मुख्य समस्याऐं निम्नलिखित है।

1. मल्लका की खाड़ी में समुन्द्री डकैती की बढ़ती घटनायें भारत व इस क्षेत्र के देशों के लिये चिन्ता का विषय है।
2. समुन्द्री मार्ग से हथियार व नशीली दवाओं की तस्करी और इस मार्ग से बढ़ता आंतकवाद मुख्य समस्या हैं
3. चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स पॉलिसी' जो भारत की विदेश नीति के लिये खतरा पैदा कर रही है उसे इन देशों के सहयोग से भारत सीमित करने का प्रयास कर रहा है। इस क्षेत्र में भारत व आसियान देशों के मध्य सहयोग की सम्भावनाऐं मौजूद है। भारत की नौसेना मलक्का की खाड़ी में समुद्री डाकुओं से सुरक्षा हेतू निगरानी के लिये तैनात है। चीन की सैन्य नीति व दक्षिण चीन सागर में चीन की साम्राज्यवादी नीति के प्रति दक्षिण–पूर्व एशिया के देश आशंकित है। सुरक्षा के मामले में भारत के लिये सकारात्मक बात यह है कि आयिसयान के देश इस क्षेत्र में भारत की सुरक्षा संबंधी संलग्नता को चीन की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति के विरूद्ध एक सन्तुलन के रूप में देख रहे है। आसियान क्षेत्रीय मंच समीक्षकों की राय में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 17
November 2016

प्रतिरक्षा के मामलों में एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में एक खुले सुरक्षा ढांचे की स्थापना में मदद करेगा।

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 17
November 2016

**दक्षिण–पूर्व एशिया में सुरक्षात्मक क्षेत्र में भारत द्वारा किये गये प्रयासः**

दक्षिण–पूर्व एशिया की सुरक्षा भारत के लिये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी भारत के लिये अपनी सुरक्षा अगर किसी कारणवश इन देशों की सुरक्षा खतरे में पड़ती है या कोई बाहरी शक्ति संघ अपना नियंत्रण करने का प्रयास करती है तो यह आवश्यक होगा कि भारत उस समस्या पर विचार करे और उसे सुलझाने का प्रयास करे, इस क्षेत्र के देशों के साथ सुरक्षात्मक क्षेत्र में विचार करने के लिये भारत द्वारा सन् 1996 में आसियान क्षेत्रीय संघ की सदस्यता ग्रहण की ओर लगातार भारत का यही प्रयास रहा है कि सुरक्षा को भी व्यापार व आर्थिक विकास की भांति विशिष्ट मुद्दा समझा जाये। इस क्षेत्र में देशों के साथ भारत द्विपक्षीय व बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास समय–समय पर आयोजित करता रहा है।

**भारत–थाइलैण्ड सैन्य अभ्यास मैत्री**

भारत व थाइलैण्ड के मध्य 2016 में संयुक्त अभ्यास मैत्री थाइलैण्ड के कराबी नामक स्थान पर आयोजित किया गया। इसमें दोनों देशों की सेनाओं ने मिलकर इस क्षेत्र में अभ्यास किये।

**आतंकवाद का मुकाबला करने के दौरान संयुक्त और रणनीति के विश्लेषण पर विचार।**

भारत व इण्डोनेशिया के मध्य सैन्य अभ्यास 2016 में बेलवान इण्डोनेशिया में शुरू हुआ। इसे समन्वित पेडोलिंग और भारत इण्डोनेशिया के साथ अपने सम्बन्धों की प्रतिबद्धता और हिन्दमहासागर में समुन्द्री सुरक्षा का प्रदर्शन करते हुये भारतीय नौसेना का जहाज 'कारमुक' व स्वदेश निर्मित मिसाइल कावैट अण्डेमान निकोबार कमान के तहत आधारित है एक डोर्नियर समुन्द्री पेट्रोल विमान के साथ 28 वे भारतीय इण्डोनेशिया समन्वित पेट्रोलिंग और दूसरे समुन्द्री अभ्यास में भाग ले रहा है।

दूसरे द्विपक्षीय अभ्यास के साथ–साथ कारपेट के 28 वे संस्करण में वृद्धि हुई। विदित है कि भारत और इण्डोनेशिया के बीच रक्षा संबंध नियमित संयुक्त गतिविधियों और दोनों के सशस्त्र बलों के मध्य बातचीत के आयोजन से लगातार मजबूत हो रहे है हाल ही में भारत व मलेशिया के मध्य भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी का अनुसरण करते हुये भारतीय नौसेना के शिवालिक और ज्योति पाते दक्षिण पूर्वी एशिया और दक्षिण हिन्द महासागर मे तैनाती के लिये मलेशिया के क्वान्टन बन्दरगाहा के दौरे पर रहे। इस क्षेत्र से जुडी मुख्य समुन्द्री समस्याओं के समाधान के लिये हाल के दिनों में भारतीय नौसेना की यहां शीध्रता से तैनाती की गई। इसके अलावा भारत सरकार की सागर की परिकल्पना

के एक अंग के रूप में ईईजेड निगरानी खोज और बचाव के साथ हिन्दमहासागर क्षेत्र में देशों की सहायता करने के अलावा निर्माण और क्षमता वृद्धि जैसी अन्य क्षमताओं में भी निवेश किया गया।

इन सब प्रयासों के अलावा भी इस क्षेत्र में भारत के लिये नई–नई समस्याऐ पैदा हो रही है। हाल ही में रोहिग्यां शरणार्थियों का मुद्दा इस क्षेत्र की शक्ति व स्थिरता के लिये खतरा बना हुआ है पिछले कुछ दिनों में म्यांमार में हुई हिसंक घटनाओं के कारणवश लाखों की संख्या में प्रवासी भारत में आ रहे है जो भारत की सुरक्षा हेतू बड़ा खतरा पैदा कर सकते है। आवश्यक है कि भारत इस समस्या को सुलझाने का तार्किक हल निकाले ताकि विश्वपटल पर उसकी मानवाधिकारी हितैषी वाले देश की छवि भी बरकरार रहे साथ ही अपनी सुरक्षा को भी मदेजनर रख सके व इस क्षेत्र की ओर से अपनी सुरक्षा मजबूत रखे।

**निष्कर्षः**

अतः कहा जा सकता है कि यह क्षेत्र (दक्षिण–पूर्व एशिया) भारत की सुरक्षा हेतू अत्यंत ही आवश्यक है क्योंकि भारत की एक बहुत बड़ी स्थलीय व जल सीमा इस क्षेत्र में स्पर्श करती है। दूसरा यह क्षेत्र भारत के लिये आर्थिक लिहाज से भी बहुत अधिक महत्व रखता है। अगर सुरक्षात्मक पक्ष ही भारत का इस क्षेत्र में कमजोर रहा तो भारत अपने अन्य पक्ष जैसे 1. आर्थिक 2. सामाजिक–सांस्कृतिक की ओर ध्यान नही दे पाऐगा। इसलिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण सुरक्षा है वर्तमान समय में पैदा रोहिग्यां समस्या के प्रति केन्द्र सरकार का रूख सकारात्मक कहा जा सकता है जिसने इन शरणार्थियों की वापसी हेतू म्यांमार सरकार से अनुरोध किया है तथा अपनी सुरक्षा पर चिन्ता व्यक्त करते हुये इसे सुलझाने के प्रयास किये है। अतः यह क्षेत्र सुरक्षात्मक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

**सन्दर्भ सूचीः**

1. द हिन्दू न्यूजपेपर
2- WWW.BBC.COM International Sep 2017
3. अरूणोदय वाजपेयी : समकालीन विश्व और भारत प्रमुख मुद्दे व चुनौतियां प्रकाशन (पियर्सन)
4. आर०एस० यादव : भारत की विदेश नीति एक विश्लेषण प्रकाशन (पियर्सन)
5. जनसत्ता न्यूजपेपर